अनुक्रमणिका

विषय / अध्याय	पृष्ठ
हिन्दी भाषा एवं शिक्षण शास्त्र	
1. वर्ण विचार : स्वर, व्यंजन, अक्षर, वर्तनी, लिंग, वचन, संधि	1 - 38
2. शब्द विचार: तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, पर्यायवाची, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द	39 - 69
3. शब्द रचना: उपसर्ग, प्रत्यय, समास, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	70 - 100
4. पद एवं पदभेद: संज्ञा, सर्वनाम, कारक चिन्ह, क्रिया, विशेषण, अवयव	101 - 139
5. वाक्य परिचय : वाक्य के अंग, वाक्य के भेद, पदक्रम	140 - 151
6. रचना: मुहावरा, लोकोक्ति, अपठित गद्यांश	152 - 173
7. बच्चों में भाषाई विकास की प्रक्रिया	174 - 202
8. बच्चों में भाषाई क्षमता एवं उनका विकास	203 - 217
9. मूल्यांकन	218 - 243

अध्याय 1

वर्ण विचार

(Phonology/Orthography)

भाग 1 - परिचय

वर्ण विचार हिंदी व्याकरण का वह प्रथम और महत्वपूर्ण विभाग है, जिसमें वर्णों के स्वरूप, भेद, उच्चारण और उनके प्रयोग की विधि का विवेचन किया जाता है। भाषा की सबसे छोटी इकाई **'ध्वनि'** (Dhwani) कहलाती है और इस ध्वनि के लिखित रूप को **'वर्ण'** (Varna) कहा जाता है। वर्णों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह को **'वर्णमाला'** (Alphabet) कहते हैं।

भाषा की संरचनात्मक इकाइयाँ

भाषा की इकाइयाँ

- **ध्वनि**
  भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई
- **वर्ण**
  भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई
- **अक्षर**
  जिसका क्षरण न हो (स्वर युक्त व्यंजन)
- **शब्द**
  वर्णों का सार्थक समूह
- **वाक्य**
  भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिंदी वर्णमाला का विकास संस्कृत की **देवनागरी लिपि** से हुआ है। महर्षि पाणिनी के 'माहेश्वर सूत्र' को वर्णमाला का आधार माना जाता है। समय के साथ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने मानक हिंदी वर्णमाला का निर्धारण किया, जिसमें ध्वनियों की संख्या और उनके मानक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

हिंदी वर्णमाला में कुल **52 वर्ण** (मानक देवनागरी के अनुसार) स्वीकार किए गए हैं।

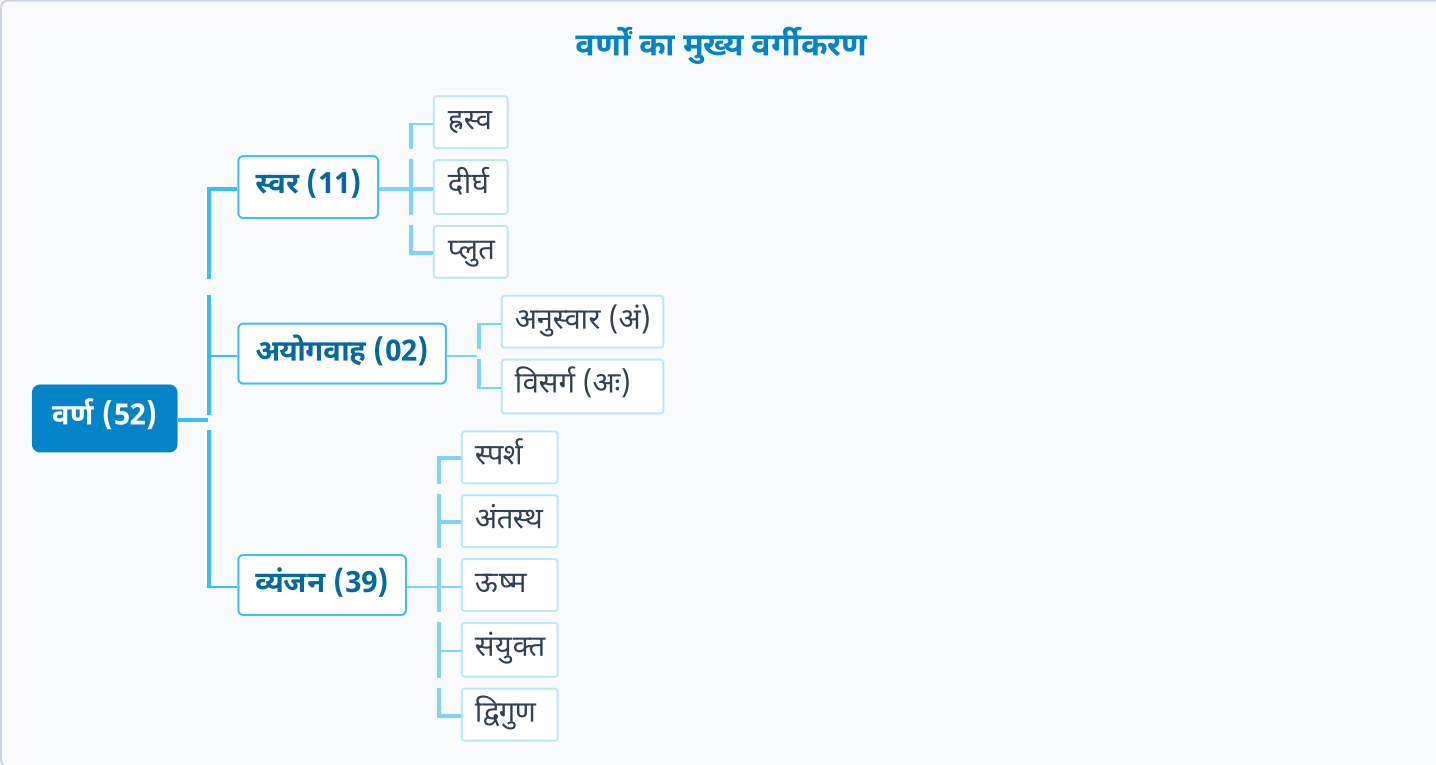

◆ 1. स्वर (Vowels)

स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं। इनकी संख्या **11** है।

🔷 स्वरों का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण

- **उच्चारण समय (मात्रा) के आधार पर:** 1. **ह्रस्व स्वर (Hrasva):** अ, इ, उ, ऋ (इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं)। 2. **दीर्घ स्वर (Dirgha):** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (ये 7 हैं)। 3. **प्लुत स्वर (Pluta):** जिनके उच्चारण में तीन गुना समय लगे (जैसे- ओ३म्)।
- **मुख-आकृति के आधार पर:** 1. विवृत (Open): आ 2. अर्ध-विवृत (Half-Open): अ, ऐ, औ 3. अर्ध-संवृत (Half-Closed): ए, ओ 4. संवृत (Closed): ई, ई, उ, ऊ
- **जीभ के प्रयोग के आधार पर:** 1. अग्र स्वर: इ, ई, ए, ऐ 2. मध्य स्वर: अ 3. पश्च स्वर: आ, उ, ऊ, ओ, औ

◆ 2. व्यंजन (Consonants)

वे वर्ण जो स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं, 'व्यंजन' कहलाते हैं।

स्पर्श व्यंजनों का वर्गीय वर्गीकरण (25 वर्ण)

वर्ग	उच्चारण स्थान	वर्ण
• **क-वर्ग**	• कंठ (Throat)	• क, ख, ग, घ, ङ
• **च-वर्ग**	• तालु (Palate)	• च, छ, ज, झ, ञ
• **ट-वर्ग**	• मूर्धा (Cerebral)	• ट, ठ, ड, ढ, ण
• **त-वर्ग**	• दंत (Teeth)	• त, थ, द, ध, न
• **प-वर्ग**	• ओष्ठ (Lips)	• प, फ, ब, भ, म

🔷 अन्य व्यंजन श्रेणियाँ

- **अंतस्थ व्यंजन (Semivowels):** य, र, ल, व (संख्या: 4)।
- **ऊष्म/संघर्षी व्यंजन (Sibilants):** श, ष, स, ह (संख्या: 4)।
- **संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants):** क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ), श्र (श्+र) (संख्या: 4)।
- **द्विगुण/उत्क्षिप्त व्यंजन:** ड़, ढ़ (इन्हें विकसित व्यंजन भी कहते हैं)।

◆ 3. उच्चारण प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण

यह परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण खंड है।

प्राणत्व और घोषत्व के आधार पर वर्गीकरण

श्रेणी	परिभाषा	सम्मिलित वर्ण
• **अघोष (Aghosh)**	• गूँज उत्पन्न न हो	• प्रत्येक वर्ग का 1st, 2nd वर्ण + श, ष, स
• **सघोष (Saghosh)**	• स्वर तंत्रियों में कंपन हो	• प्रत्येक वर्ग का 3rd, 4th, 5th + सभी स्वर + य, र, ल, व, ह
• **अल्पप्राण (Alpaprana)**	• वायु की कम मात्रा	• प्रत्येक वर्ग का 1st, 3rd, 5th + य, र, ल, व
• **महाप्राण (Mahaprana)**	• वायु की अधिक मात्रा	• प्रत्येक वर्ग का 2nd, 4th + श, ष, स, ह

भाग 4 - अंतर्संबंध

वर्ण विचार का सीधा संबंध **'संधि'** (Sandhi) और **'वर्तनी'** (Spelling) से है। जब दो वर्ण अत्यंत निकट आते हैं, तो उनमें विकार (परिवर्तन) होता है, जिसे संधि कहते हैं। वर्णों के शुद्ध उच्चारण के बिना शुद्ध वर्तनी लिखना असंभव है। उदाहरण के लिए, 'ङ' (पंचम वर्ण) और 'अनुस्वार' का अंतर्संबंध संधि के नियमों को स्पष्ट करता है।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **कुल वर्णों की संख्या:** 52 (स्वर-11, अयोगवाह-02, व्यंजन-33, द्विगुण-02, संयुक्त-04)।

✔ **मानक स्वर:** 'ऋ' को लेखन में स्वर माना जाता है, पर उच्चारण में यह 'रि' जैसा है।

✔ **आगत ध्वनियाँ:** ज़, फ़ (फारसी/अरबी से) और ऑ (अंग्रेजी से, जैसे- डॉक्टर)।

✔ **लुंठित वर्ण:** 'र' को लुंठित वर्ण कहा जाता है।

✔ **पार्श्विक वर्ण:** 'ल' को पार्श्विक वर्ण कहा जाता है।

✔ **अर्धस्वर:** 'य' और 'व' को अर्धस्वर कहा जाता है।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[नाशिक्य व्यंजन]:** प्रत्येक वर्ग का 5वाँ वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) नाशिक्य होता है।

🎯**[हकार की ध्वनि]:** महाप्राण ध्वनियों में 'ह' की स्पष्ट ध्वनि सुनाई देती है।

🎯**[वत्सर्य व्यंजन]:** न, स, र, ल को 'वत्सर्य' (मसूड़ा) व्यंजन भी कहा जाता है।

🎯**[काकल्य वर्ण]:** 'ह' को काकल्य वर्ण कहा जाता है क्योंकि इसका उच्चारण स्वरयंत्र मुख से होता है।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम - वर्ण vs अक्षर]:** 'राम' शब्द में वर्ण 4 हैं (र+आ+म+अ), लेकिन अक्षर केवल 2 हैं (रा-म)।

⚠ **[ङ और ड़ में अंतर]:** 'ङ' क-वर्ग का पंचम वर्ण है (बिंदु बगल में), जबकि 'ड़' द्विगुण व्यंजन है (बिंदु नीचे)।

⚠ **[अनुस्वार vs अनुनासिक]:** अनुस्वार (ं) का उच्चारण केवल नाक से होता है, जबकि अनुनासिक (ँ) का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है।

स्वर एवं व्यंजन

(Vowels and Consonants)

वर्णों का वर्गीकरण

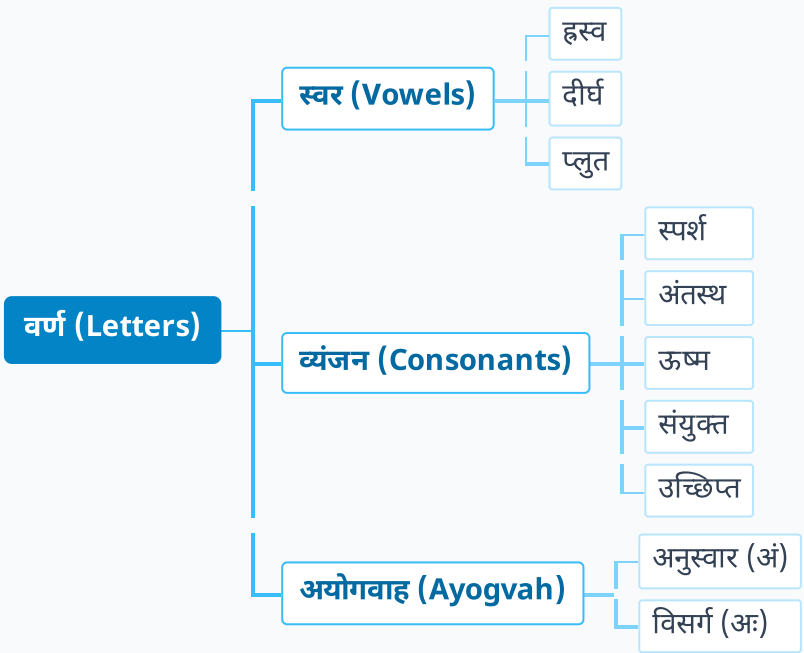

◆ स्वर (Vowels) का विस्तृत विश्लेषण

🔷 स्वर की परिभाषा एवं प्रकृति

- **परिभाषा:** वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है और जिनके उच्चारण में अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं ली जाती।
- **संख्या:** हिंदी में मूलतः **11 स्वर** (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ) होते हैं।
- **मात्रा:** स्वरों के बदले हुए स्वरूप को 'मात्रा' कहते हैं। 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती (उदासीन स्वर)।

उच्चारण समय (मात्रा) के आधार पर वर्गीकरण

भेद	विवरण	उदाहरण
• **ह्रस्व स्वर (Short)**	• जिनके उच्चारण में कम समय (एक मात्रा) लगे।	• अ, इ, उ, ऋ (मूल स्वर)
• **दीर्घ स्वर (Long)**	• ह्रस्व से दोगुना समय (दो मात्रा) लगे।	• आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
• **प्लुत स्वर (Prolonged)**	• ह्रस्व से तिगुना समय लगे (पुकारने में प्रयुक्त)।	• ओ३म् (S जैसा चिह्न)

🔷 मुखाकृति एवं जिह्वा के आधार पर वर्गीकरण

- **जिह्वा के उत्थापित भाग के आधार पर:** - अग्र स्वर: इ, ई, ए, ऐ - मध्य स्वर: अ - पश्च स्वर: आ, उ, ऊ, ओ, औ
- **मुखाकृति (Opeing of Mouth) के आधार पर:** - संवृत (Closed): इ, ई, उ, ऊ - अर्ध-संवृत: ए, ओ - विवृत (Open): आ - अर्ध-विवृत: अ, ऐ, औ

- **ओष्ठों की स्थिति के आधार पर:** - वृत्तमुखी (Rounded): उ, ऊ, ओ, औ - अवृत्तमुखी (Unrounded): अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

◆ व्यंजन (Consonants) का विस्तृत विश्लेषण

🔷 व्यंजन की परिभाषा एवं प्रकार

- **परिभाषा:** वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है। प्रत्येक व्यंजन में 'अ' स्वर मिला होता है।
- **संख्या:** मूल व्यंजनों की संख्या **33** है। कुल वर्णों में इनकी संख्या बढ़ जाती है।

स्पर्श व्यंजन (वर्गों के आधार पर)

वर्ग	उच्चारण स्थान	वर्ण (व्यंजन)
• **क वर्ग (Velar)**	• कण्ठ (Throat)	• क, ख, ग, घ, ङ
• **च वर्ग (Palatal)**	• तालु (Palate)	• च, छ, ज, झ, ञ
• **ट वर्ग (Retroflex)**	• मूर्धा (Cerebral)	• ट, ठ, ड, ढ, ण
• **त वर्ग (Dental)**	• दन्त (Teeth)	• त, थ, द, ध, न
• **प वर्ग (Labial)**	• ओष्ठ (Lips)	• प, फ, ब, भ, म

अन्य महत्वपूर्ण व्यंजन श्रेणियाँ

श्रेणी	वर्ण	विवरण
• **अंतस्थ व्यंजन (Semi-vowels)**	• य, र, ल, व	• स्वर और व्यंजन के बीच की स्थिति।
• **ऊष्म व्यंजन (Sibilants)**	• श, ष, स, ह	• उच्चारण में घर्षण से ऊष्मा पैदा होती है।
• **संयुक्त व्यंजन (Compound)**	• क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	• दो भिन्न व्यंजनों के मेल से बने।
• **उच्छिप्त व्यंजन (Flapped)**	• ड़, ढ	• जिनके उच्चारण में जीभ झटके से नीचे गिरती है।

🔷 बाह्य प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण

- **घोषत्व के आधार पर (Vibration):** - **अघोष:** प्रत्येक वर्ग का प्रथम और द्वितीय वर्ण + श, ष, स। - **सघोष:** प्रत्येक वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण + सभी स्वर + य, र, ल, व, ह।
- **प्राणत्व के आधार पर (Air Pressure):** - **अल्पप्राण:** प्रत्येक वर्ग का 1, 3, 5वाँ वर्ण + य, र, ल, व। - **महाप्राण:** प्रत्येक वर्ग का 2, 4वाँ वर्ण + श, ष, स, ह।

◆ संयुक्त व्यंजन एवं विशेष बिंदु

संयुक्त व्यंजनों का निर्माण

संयुक्त वर्ण	मेल (व्यंजन + व्यंजन)	उदाहरण
• **क्ष**	• क् + ष	• क्षत्रिय
• **त्र**	• त् + र	• त्रिशूल
• **ज्ञ**	• ज् + ञ	• ज्ञान
• **श्र**	• श् + र	• श्री

वर्णों की गणना का सारांश

हिंदी वर्णमाला (52 वर्ण)

स्वर
11 (अ से औ)

अयोगवाह
02 (अं, अः)

स्पर्श व्यंजन
25 (क से म)

अंतस्थ व्यंजन
04 (य, र, ल, व)

ऊष्म व्यंजन
04 (श, ष, स, ह)

संयुक्त व्यंजन
04 (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)

उच्छिप्त व्यंजन
02 (ड़, ढ)

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **अर्धस्वर (Semi-vowels):** 'य' और 'व' को अर्धस्वर कहा जाता है।

✔ **लुंठित वर्ण (Trilled):** 'र' को लुंठित व्यंजन कहते हैं क्योंकि जीभ बेलन की तरह लुढ़कती है।

✔ **पार्श्विक व्यंजन (Lateral):** 'ल' को पार्श्विक कहते हैं क्योंकि हवा जीभ के बगल (पार्श्व) से निकलती है।

✔ **काकल्य वर्ण:** 'ह' को काकल्य या स्वरयंत्रमुखी वर्ण कहा जाता है।

✔ **नासिक्य व्यंजन:** प्रत्येक वर्ग का 5वाँ अक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) पंचमाक्षर कहलाता है।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[मानक स्वर]:** ऋ (Ri) का उच्चारण अब 'रि' जैसा होने लगा है, इसलिए इसे केवल लेखन में स्वर माना जाता है, उच्चारण में यह व्यंजन जैसा व्यवहार करता है।

🎯**[व्यंजन द्वित्व]:** जब एक ही व्यंजन दो बार आए (जैसे- दिल्ली, बच्चा), उसे 'द्वित्व' या 'युग्मक' ध्वनि कहते हैं।

🎯**[संपृक्त ध्वनि]:** जब एक ध्वनि दो व्यंजनों से जुड़ी हो (जैसे- कम्बल), उसे संपृक्त ध्वनि कहते हैं।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम - ड/ड़]:** 'ड' स्पर्श व्यंजन है जो शब्द के शुरू में आ सकता है (जैसे- डमरू), लेकिन 'ड़' उच्छिप्त व्यंजन है जो कभी भी शब्द के प्रारंभ में नहीं आता (जैसे- सड़क)।

⚠ **[भ्रम - अयोगवाह]:** अं (अनुस्वार) और अः (विसर्ग) न तो पूर्णतः स्वर हैं और न ही पूर्णतः व्यंजन, इसलिए इन्हें अयोगवाह कहा जाता है।

⚠ **[ष का उच्चारण]:** 'ष' (मूर्धन्य श) का सही उच्चारण स्थान मूर्धा है, जिसे संस्कृत शब्दों (तत्सम) में ही प्रयोग किया जाता है।

अक्षर एवं वर्तनी

(Letters and Orthography)

अक्षर एवं वर्तनी का सूक्ष्म वर्गीकरण

- **अक्षर एवं वर्तनी**
  - **अक्षर (Syllable)**
    - स्वरान्त (Vowel ending)
    - व्यंजनान्त (Consonant ending)
  - **वर्तनी (Spelling)**
    - तत्सम शब्दावली
    - तद्भव शब्दावली
    - विदेशी शब्द
  - **अशुद्धि के प्रकार**
    - स्वर संबंधी
    - व्यंजन संबंधी
    - संधि/समास संबंधी

🔷 अक्षर (Syllable): अवधारणा एवं संरचना

- **परिभाषा:** 'अक्षर' का शाब्दिक अर्थ है - जिसका 'क्षर' (विनाश) न हो। ध्वनियों के उस समूह को अक्षर कहते हैं जिसका उच्चारण श्वास के एक ही आघात (One puff of breath) में होता है।
- **वर्ण और अक्षर में अंतर:** 'वर्ण' भाषा की लघुतम इकाई है जिसके खंड नहीं हो सकते (जैसे- क्, अ), जबकि 'अक्षर' में स्वर और व्यंजन का मेल हो सकता है (जैसे- 'का' एक अक्षर है जिसमें 'क' और 'आ' दो वर्ण हैं)।
- **अक्षर के भेद:**
  - **बद्धाक्षर (Closed Syllable):** जिसकी अंतिम ध्वनि व्यंजन हो (जैसे- आप, सत)।
  - **मुक्ताक्षर (Open Syllable):** जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो (जैसे- जा, खा, पा)।

अक्षर निर्माण की प्रक्रिया

अक्षर संरचना

मूल ध्वनि
मुख से निकलने वाली प्राथमिक आवाज

वर्ण
ध्वनि का लिखित रूप (क्, अ)

अक्षर

स्वर युक्त वर्ण (क)

शब्द

अक्षरों का सार्थक समूह

🔷 वर्तनी (Orthography): मानक नियम

- **अर्थ:** लिखने की रीति को वर्तनी या 'अक्षरी' कहते हैं। इसका सीधा संबंध उच्चारण (Pronunciation) से होता है। यदि उच्चारण अशुद्ध होगा तो वर्तनी भी अशुद्ध होगी।
- **हिंदी वर्तनी का मानकीकरण:** भारत सरकार के 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार ही वर्तनी को शुद्ध माना जाता है।
- **विभक्ति चिह्न:** संज्ञा शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न (ने, को, से आदि) अलग लिखे जाते हैं (जैसे- राम ने), जबकि सर्वनामों के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं (जैसे- उसने)।

स्वर एवं व्यंजन संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ और शुद्ध रूप

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्धि का कारण
• **आगामी**	• आगामी	• स्वर की अधिकता
• **अतिथी**	• अतिथि	• इ/ई की मात्रा का भ्रम
• **अहिल्या**	• अहल्या	• स्वर आगम (अनावश्यक स्वर)
• **प्रदर्शनी**	• प्रदर्शनी	• मानक प्रयोग
• **अन्त्याक्षरी**	• अन्त्याक्षरी	• व्यंजन अनुक्रम
• **उज्जवल**	• उज्ज्वल	• द्वित्व व्यंजन (दो 'ज्')
• **कवियत्री**	• कवयित्री	• प्रत्यय संबंधी अशुद्धि
• **आशीर्वाद**	• आशीर्वाद	• रेफ (र) का गलत स्थान
• **शॉक**	• शोक	• ओ/औ मात्रा भेद
• **स्रिष्टी**	• सृष्टि	• 'ऋ' के स्थान पर 'र' का प्रयोग

🔷 वर्तनी के विशिष्ट नियम (Micro Analysis)

- **'र' के विभिन्न रूप:**
  - **रेफ (र्):** यदि 'र' स्वर रहित हो, तो वह अगले वर्ण के ऊपर लगता है (जैसे- धर्म, कर्म)।
  - **पदेन (र):** यदि 'र' से पहले वाला व्यंजन स्वर रहित हो, तो 'र' नीचे लगता है (जैसे- प्रश्न, चक्र)।
  - **ट-वर्ग के साथ:** ट, ठ, ड, ढ के साथ 'र' का रूप 'ट्र' जैसा होता है (जैसे- राष्ट्र, ड्रम)।

- **पंचम वर्ण एवं अनुस्वार:** संस्कृत (तत्सम) शब्दों में पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्व्, न्, म्) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग वैकल्पिक है, किंतु हिंदी के सरलीकरण हेतु अनुस्वार को प्राथमिकता दी जाती है (जैसे- गंगा, चंचल)।
- **चंद्रबिंदु (अनुनासिक):** जब स्वर का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से हो, तो चंद्रबिंदु (ँ) लगता है (जैसे- चाँद, आँख)। यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो, तो स्थान की कमी के कारण बिंदु ही लगाया जाता है (जैसे- मैं, गोंद)।

महत्वपूर्ण तत्सम-तद्भव वर्तनी विश्लेषण

अशुद्ध/तद्भव	शुद्ध/तत्सम	मुख्य नियम
• **दुध**	• दुग्ध	• संयुक्ताक्षर नियम
• **सुरुज**	• सूर्य	• रेफ प्रयोग
• **करम**	• कर्म	• वर्ण लोप/आगम
• **दंस**	• दंश	• 'स' और 'श' का प्रयोग
• **छमा**	• क्षमा	• 'क्ष' का प्रयोग

🔷 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' और 'श्र' (संयुक्त व्यंजन) की वर्तनी

- **क्ष:** यह 'क' और 'ष' के योग से बना है। इसे 'छ' समझना सामान्य भूल है (जैसे- 'क्षत्री' शुद्ध है, 'छत्री' का अर्थ छाता होता है)।
- **ज्ञ:** यह 'ज' और 'ञ' के योग से बना है, पर इसका उच्चारण 'ग्य' जैसा होता है (जैसे- विज्ञान)।
- **श्र:** यह 'श' और 'र' के योग से बना है (जैसे- श्री, श्रृंगार - ध्यान दें, श्रृंगार में 'र' और 'ऋ' एक साथ नहीं आते)।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **अन्त्याक्षरी:** इसमें 'न्' और 'त्' दोनों आधे होते हैं।

✔ **श्रृंगार:** इसमें 'श' के नीचे 'ऋ' की मात्रा होती है, 'र' (पदेन) नहीं होता।

✔ **उज्ज्वल:** इसमें दोनों 'ज' आधे (स्वर रहित) होते हैं क्योंकि यह 'उत् + ज्वल' की संधि है।

✔ **चिह्न:** इसमें 'ह' आधा है और 'न' पूरा है (चिह्-न), इसे 'चिनह' लिखना गलत है।

✔ **सांस्कृतिक:** 'संस्कृति' में 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के पहले स्वर 'अ' का 'आ' हो जाता है।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[नुक्ता]:** अरबी-फारसी शब्दों में 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' के नीचे बिंदु (नुक्ता) अनिवार्य है, इसके बिना अर्थ बदल सकता है (जैसे: राज = शासन, राज़ = रहस्य)।

🎯**[द्वित्व व्यंजन]:** जब एक ही व्यंजन दो बार आए (जैसे- दिल्ली, पक्का), तो पहला व्यंजन हमेशा स्वर रहित होता है।

🎯 **[रेफ का नियम]:** 'र' जिस वर्ण से पहले उच्चारित होता है, उसी वर्ण के ऊपर रेफ (र्) के रूप में बैठता है (उदा. आ-शी-र्-वा-द ➔ आशीर्वाद)।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[य/ए का भ्रम]:** 'गये' के स्थान पर 'गए' और 'हुआ' के स्थान पर 'हुए' (स्वर रूप) को मानक माना गया है।

⚠ **[स/श/ष]:** 'शासन' में पहले 'श' (तालव्य) और फिर 'स' (दन्त्य) आता है। 'सुषमा' में 'ष' (मूर्धन्य) का प्रयोग ध्यान रखें।

⚠ **[ऋ और रि]:** 'ऋ' एक स्वर है जबकि 'रि' व्यंजन+स्वर का योग है। 'ऋषि' शुद्ध है, 'रिषि' अशुद्ध।

वर्तनी: शुद्धिकरण एवं मानक रूप

(Spelling: Rectification and Standard Form)

वर्तनी का अर्थ है शब्दों में अक्षरों का निश्चित क्रम। हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है, जिसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। परीक्षाओं में प्रायः उच्चारण दोष, क्षेत्रीय प्रभाव और व्याकरणिक नियमों की अज्ञानता के कारण होने वाली अशुद्धियों पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

वर्तनी अशुद्धियों के प्रमुख आधार

- **वर्तनी अशुद्धियाँ**
  - **स्वर संबंधी**
    - ह्रस्व-दीर्घ (इ/ई
    - उ/ऊ)
    - अ/आ का अनुचित प्रयोग
  - **व्यंजन संबंधी**
    - श/ष/स का भ्रम
    - न/ण का दोष
    - ड/ड़ एवं ढ/ढ़ का अंतर
  - **शब्द संरचना**
    - संधि
    - समास
    - उपसर्ग और प्रत्यय (विशेषकर 'इक' प्रत्यय)
  - **अन्य विशिष्ट**
    - अनुस्वार/अनुनासिक
    - रेफ (र) का प्रयोग
    - हलंत संबंधी

◆ सर्वाधिक पूछे जाने वाले शब्द (High-Frequency Words)

अति-महत्वपूर्ण वर्तनी शुद्धिकरण

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
• **आशिर्वाद**	• *आशीर्वाद*	• उज्वल / उज्जवल	• *उज्ज्वल*
• **कवियित्री**	• *कवयित्री*	• श्रृंगार	• *श्रृंगार*
• **अन्त्याक्षरी**	• *अंत्याक्षरी*	• ज्योत्सना	• *ज्योत्स्ना*
• **पजहनी / पूजनीय**	• *पूजनीय*	• पूज्य	• *पूज्य*
• **हस्ताक्षेप**	• *हस्तक्षेप*	• अहिल्या	• *अहल्या*
• **द्वारिका**	• *द्वारका*	• संन्यासी	• *संन्यासी*
• **तदोपरांत**	• *तदुपरांत*	• आधिन	• *अधीन*
• **मिष्ठान्न**	• *मिष्टान्न*	• हिरण्यकश्यप	• *हिरण्यकशिपु*

🔷 प्रत्यय संबंधी विशेष नियम ('इक' और 'य' प्रत्यय)

- **'इक' प्रत्यय का नियम:** जब शब्द के अंत में 'इक' प्रत्यय जुड़ता है, तो शब्द के प्रथम स्वर में परिवर्तन होता है:
  - 'अ' या 'आ' का 'आ' हो जाता है (सप्ताह + इक = **साप्ताहिक**)।
  - 'इ/ई/ए' का 'ऐ' हो जाता है (इतिहास + इक = **ऐतिहासिक**)।
  - 'उ/ऊ/ओ' का 'औ' हो जाता है (उद्योग + इक = **औद्योगिक**)।
  - **'य' प्रत्यय का नियम:** 'य' प्रत्यय जुड़ने पर प्रथम वर्ण दीर्घ होता है और अंतिम वर्ण आधा हो जाता है (अदिति + य = **आदित्य**, स्वस्थ + य = **स्वास्थ्य**, महात्म + य = **माहात्म्य**)।

◆ संधि एवं व्याकरणिक नियमों पर आधारित शब्द

संधि एवं प्रत्यय जनित शुद्धिकरण

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	नियम/कारण
• **उपरोक्त**	• *उपर्युक्त*	• यण संधि (उपरि + उक्त)
• **निरोग**	• *नीरोग*	• विसर्ग संधि (निः + रोग)
• **प्रफुल्लित**	• *प्रफुल्ल*	• 'इत' प्रत्यय का अनावश्यक प्रयोग
• **माननीय**	• *माननीय*	• 'अनीय' प्रत्यय का शुद्ध रूप
• **अतिश्योक्ति**	• *अतिशयोक्ति*	• 'श' पूर्ण होता है (अतिशय + उक्ति)
• **चिन्ह**	• *चिह्न*	• 'ह' आधा और 'न' पूर्ण होता है
• **ब्रम्हा**	• *ब्रह्मा*	• 'ह' आधा और 'म' पूर्ण होता है
• **एक्य**	• *ऐक्य*	• वृद्धि संधि/मूल शब्द 'एक'

🔷 'श, ष, स' और 'ण, न' के प्रयोग की शुद्धता

- **श-ष-स का नियम:** 'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ) के पहले सदैव मूर्धन्य 'ष' आता है (उदा: **कष्ट, धनुष्टंकार, निष्ठा**)।
- **ण और न का नियम:** यदि किसी शब्द में 'ऋ', 'र' या 'ष' हो, तो उसके बाद आने वाला 'न', 'ण' में बदल जाता है (उदा: **परिणाम, रामायण, भूषण**), बशर्ते बीच में च-वर्ग, ट-वर्ग या त-वर्ग न हो।

◆ धार्मिक, भौगोलिक एवं प्रशासनिक शब्दावली

क्षेत्रवार महत्वपूर्ण शब्द

श्रेणी	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
• **धार्मिक/पौराणिक**	• वाल्मिकी	• *वाल्मीकि*
• **धार्मिक/पौराणिक**	• कालिदास	• *कालिदास* (लघु 'इ')

श्रेणी	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
• **भौगोलिक**	• कौशल्या	• *कौशल्या / कौसल्या*
• **भौगोलिक**	• भागीरथी	• *भागीरथी* (भगीरथ से निर्मित)
• **प्रशासनिक**	• अधिशासी	• *अधिशाषी*
• **प्रशासनिक**	• प्रमाणिक	• *प्रामाणिक*
• **दैनिक प्रयोग**	• अगामी	• *आगामी*
• **दैनिक प्रयोग**	• त्यौहार	• *त्योहार* (एक मात्रा)

🔷 अनुस्वार (ं) बनाम अनुनासिक (ँ) एवं 'ड़-ढ़' प्रयोग

- **पंचमाक्षर नियम:** मानक हिन्दी में पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग श्रेष्ठ माना जाता है (उदा: **संबंध, हिंदी**)।
- **चंद्रबिंदु (ँ):** शिरोरेखा के ऊपर मात्रा न होने पर ही चंद्रबिंदु लगता है (उदा: **आँख, चाँद**), अन्यथा अनुस्वार का प्रयोग होता है (उदा: **गोंद, ईंट**)।
- **उत्क्षिप्त व्यंजन (ड़, ढ़):** ये शब्द के आरंभ में कभी नहीं आते। शब्द के बीच या अंत में इनका प्रयोग होता है (उदा: **सड़क, पढ़ना**)। आरंभ में केवल 'ड' और 'ढ' आते हैं (उदा: **डमरू, ढोलक**)।

🚀 ब्रह्मास्त्र तथ्य

✔ **उज्ज्वल:** इसमें दो 'ज' होते हैं और दोनों ही आधे (स्वर रहित) होते हैं।

✔ **शृंगार:** इसमें 'श्र' के नीचे 'ऋ' की मात्रा होती है, अतः 'र' का डंडा नहीं लगता।

✔ **कवयित्री:** याद रखें 'व' पर कोई मात्रा नहीं होती, 'य' पर छोटी 'इ' और 'त्र' पर बड़ी 'ई' होती है।

✔ **अंतर्ध्यान:** यह शब्द गलत है, शुद्ध शब्द **'अंतर्धान'** है।

✔ **सांस्कृतिक:** 'संस्कृति' में 'इक' जुड़ने पर 'सांस्कृतिक' बनता है।

🎯 Exam Oriented Catch Point

🎯**[द्वंद्व]:** दोनों 'द' के नीचे 'व' लगा होता है।

🎯**[जिजीविषा]:** पहले 'ज' पर छोटी 'इ', दूसरे पर बड़ी 'ई' (जीने की इच्छा)।

🎯**[मुमूर्षु]:** पहले 'म' पर छोटा 'उ', दूसरे पर बड़ा 'ऊ' और 'ष' पर छोटा 'उ' (मरने का इच्छुक)।

🎯**[प्रदर्शनी]:** शुद्ध शब्द 'प्रदर्शनी' है, जबकि 'प्रियदर्शिनी' में 'श' पर 'इ' की मात्रा होती है।

⚠️ सावधानियां

⚠ **[भ्रम - पूज्य]:** 'पूज्य' शुद्ध है, लेकिन 'पूजनीय' में 'ज' पूरा होता है (पूजनीया नहीं)।

⚠ **[भ्रम - 'ऐ' और 'औ']:** 'ऐक्य' और 'औत्सुक्य' शुद्ध हैं; 'ऐक्यता' या 'औत्सुक्यता' अशुद्ध हैं (य और ता प्रत्यय एक साथ नहीं आते)।

⚠ **[भ्रम - सन्यासी]:** सन्यासी में 'स' के ऊपर बिंदी (अनुस्वार) और आधा 'न' दोनों अनिवार्य हैं (संन्यासी)।

लिंग

(Gender)

भाग 1 - परिचय

व्याकरण में 'लिंग' उस संज्ञा रूप को कहते हैं जिसके द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव के **पुरुष जाति** या **स्त्री जाति** होने का बोध होता है। 'लिंग' संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'चिह्न' या 'निशान' होता है। हिंदी व्याकरण में लिंग का निर्धारण मुख्य रूप से शब्द के अर्थ और उसके प्रयोग (अन्वय) के आधार पर किया जाता है।

लिंग का सामान्य वर्गीकरण

- **लिंग का सामान्य वर्गीकरण**
  - **पुल्लिंग** — पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द
  - **स्त्रीलिंग** — स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द

1. लिंग के भेद और उनकी पहचान।
2. पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम।
3. नित्य पुल्लिंग एवं नित्य स्त्रीलिंग शब्द।
4. लिंग संबंधी अपवाद और विशेष प्रयोग।

भाग 2 - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, परंतु लिंग व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आए हैं। जहाँ संस्कृत में **तीन लिंग** (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग) प्रचलित थे, वहीं हिंदी में केवल **दो लिंग** (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग) ही शेष रहे। संस्कृत के अधिकांश 'नपुंसक लिंग' शब्द हिंदी में 'पुल्लिंग' के अंतर्गत समाहित हो गए। हिंदी में लिंग का निर्धारण 'रूपगत' (Form) और 'अर्थगत' (Meaning) दोनों आधारों पर होता है।

भाग 3 - विस्तृत अध्ययन

🔷 पुल्लिंग की पहचान (Identification of Masculine)

- **अकारांत शब्द:** प्रायः जिन शब्दों के अंत में 'अ' आता है, वे पुल्लिंग होते हैं (जैसे- तन, मन, धन, वन)।
- **समूहवाचक संज्ञा:** मंडल, समाज, दल, समूह, वर्ग (अपवाद: संसद, सभा, कक्षा स्त्रीलिंग हैं)।
- **भारी और बेडौल वस्तुएँ:** लट्ठा, बोरा, पत्थर, गट्ठर।
- **प्रत्यय आधारित:** जिन शब्दों के अंत में 'पा', 'पन', 'आ', 'आवा', 'खाना' आते हैं (जैसे- बुढ़ापा, बचपन, पलावा, डाकखाना)।

पुल्लिंग शब्दों का वर्गीकरण

श्रेणी	उदाहरण	अपवाद
• दिनों के नाम	• सोमवार, मंगलवार, रविवार	

श्रेणी	उदाहरण	अपवाद
• महीनों के नाम	• चैत्र, वैशाख, जनवरी, फरवरी	• मई, जुलाई
• देशों के नाम	• भारत, चीन, रूस, अमेरिका	
• पर्वतों के नाम	• हिमालय, विंध्याचल, आल्प्स	
• ग्रहों के नाम	• सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि	• पृथ्वी (स्त्रीलिंग)
• धातुओं के नाम	• सोना, ताँबा, लोहा, पीतल	• चाँदी (स्त्रीलिंग)
• रत्नों के नाम	• हीरा, पन्ना, मूंगा, मोती	• मणि (स्त्रीलिंग)
• अनाज के नाम	• गेहूँ, चना, जौ, बाजरा	• मक्का, अरहर, मूँग
• पेड़ों के नाम	• आम, नीम, बरगद, पीपल	• इमली, नारंगी
• द्रव पदार्थों के नाम	• पानी, तेल, घी, दूध, शरबत	• चाय, कॉफी, लस्सी, स्याही

🔷 स्त्रीलिंग की पहचान (Identification of Feminine)

- **इकारांत शब्द:** जिन शब्दों के अंत में 'ई' आती है, वे प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं (जैसे- नदी, टोपी, रोटी, चिट्ठी)।
- **अहट/आवट प्रत्यय:** घबराहट, सजावट, लिखावट, चिकनाहट।
- **इया प्रत्यय:** गुड़िया, डिबिया, खटिया, लुटिया।
- **भाषा और बोलियाँ:** हिंदी, अंग्रेजी, अवधी, ब्रजभाषा, जापानी।

स्त्रीलिंग शब्दों का वर्गीकरण

श्रेणी	उदाहरण
• नदियों के नाम	• गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी (अपवाद: सोन, ब्रह्मपुत्र पुल्लिंग हैं)
• तिथियों के नाम	• प्रथमा, द्वितीया, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या
• नक्षत्रों के नाम	• अश्विनी, भरणी, रोहिणी (अपवाद: पुष्य, अभिजित पुल्लिंग हैं)
• भोजन के नाम	• रोटी, पूरी, खीर, दाल, सब्जी (अपवाद: पराँठा, हलवा, दही पुल्लिंग हैं)
• मसालों के नाम	• मिर्च, हल्दी, इलायची, दालचीनी (अपवाद: नमक, जीरा, धनिया पुल्लिंग हैं)

🔷 लिंग परिवर्तन के प्रमुख नियम

- **'अ' को 'आ' में बदलना:** छात्र → छात्रा, सुत → सुता, बाल → बाला।
- **'अ/आ' को 'ई' में बदलना:** देव → देवी, लड़का → लड़की, दास → दासी।
- **'आ' को 'इया' में बदलना:** बूढ़ा → बुढ़िया, कुत्ता → कुतिया, चूहा → चुहिया।
- **'इन' प्रत्यय जोड़कर:** धोबी → धोबिन, माली → मालिन, नाग → नागिन।